Dk – तुमने सुना है कि यह कहा गया था: अपनी शपथ मत तोड़ो मत्ती
५:३३-३७ | 1

– Save This Page as a PDF–

तुमने सुना है कि यह कहा गया था:

अपनी शपथ मत तोड़ो

मत्ती ५:३३-३७

खोदाई: क्या यीशु ने कहा था कि शपथ बुरी होती है? आप कैसे कल्पना करते हैं कि जिम्मेदारी लेने से बचने के लिए शपथ के बारे में तानाख में दी गई शिक्षा का गलत इस्तेमाल किया जा रहा है? शपथ ईमानदारी का ख़राब विकल्प क्यों हैं? क्या यह मार्ग विश्वासियों को मुकदमे या अदालत में शपथ लेने से रोकता है?

विचार करें: आपको क्या लगता है कि आपके मित्र आपकी निष्ठा को किस प्रकार देखते हैं? तुम्हारा जीवनसाथी? तुम्हारे बच्चे? आपके रिश्तेदार? आपके सहकर्मी? तुम्हारे पड़ोसी? जब लोग आपको देखते हैं और आपके बारे में बात करते हैं, तो क्या वे कहते हैं कि आप सच बोलने वाले हैं? या क्या वे आपसे सावधान हैं क्योंकि वे भरोसा नहीं कर सकते कि आप वही करेंगे जो आप करने को कहते हैं? यदि यह आपके बारे में सच है, तो आप इसे बदलने के लिए क्या कदम उठा सकते हैं?

अपने चौथे उदाहरण में टोरा की सच्ची धार्मिकता को फरीसी यहूदी धर्म के साथ तुलना करते हुए, मास्टर हमें हर समय अपने वादों में ईमानदारी रखना सिखाते हैं। एक बार फिर, यीशु पहली सदी के यहूदी धर्म में एक सामान्य विषय के बारे में सिखाते हैं। शपथ या प्रतिज्ञा में किसी के शब्द के प्रयोग को काफी गंभीरता से लिया जाता था। टोरा में, आपका शब्द आपका बंधन था। यदि आपने शपथ ली है, तो यह नितांत अनिवार्य है कि आप उसका पालन करें। लेकिन मौखिक कानून (Ei – मौखिक कानून देखें) ने शपथ तोड़ने के सभी प्रकार के तरीके दिए। तल्मूड के दो ट्रैक्टेट्स शपथ के संबंध में कई विवरणों और व्याख्याओं को संबोधित करते हैं (ट्रैक्टेट्स शवुओट और नेडारिम)। यह इन रब्बी व्याख्याओं में से कुछ है जिसे येशु ने संबोधित करते हुए कहा था: आपने सुना है कि हमारे पूर्वजों से कहा गया था, “अपनी शपथ मत तोड़ो,” और “एडोनाई के लिए अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करो” (मत्ती ५:३३; लैव्यव्यवस्था १९: १२; गिनती ३०:२; देउत २३:२१)।

परमेश्वर ने उनके नाम पर शपथ लेने की व्यवस्था की (लैव्यव्यवस्था १९:१२) और तानाख के कई धर्मियों ने, टोरा देने से पहले और बाद में, उस प्रथा का पालन किया। इब्राहीम ने सदोम के राजा (उत्पत्ति १४:२२-२४) और अबीमेलेक (उत्पत्ति २१:२३-२४) को एदोनै के नाम की शपथ के साथ अपने वादों की पुष्टि की। उसने अपने सेवक एलीएजेर को स्वर्ग के परमेश्वर और पृथ्वी के परमेश्वर यहोवा की शपथ खिलाई कि वह इसहाक के

Dk – तुमने सुना है कि यह कहा गया था: अपनी शपथ मत तोड़ो मत्ती
५:३३-३७ | 2

लिए अपने आस-पास के बुतपरस्त कनानियों में से नहीं, बल्कि इब्राहीम की मातृभूमि मेसोपोटामिया के रिश्तेदारों से पत्नी लेगा (उत्पत्ति २४:१-४, १०)। इसहाक ने भी वैसा ही किया (उत्पत्ति २६:३१)। याकूब और उसके ससुर ने मिस्पा में एक साथ वाचा बाँधते समय शपथ ली (उत्पत्ति ३१:४४-५३)। दाऊद और योनातान ने मिलकर दाऊद के घराने के विषय में शपथ खाई (प्रथम शमूएल २०:१६)। दाऊद ने स्वयं यहोवा की शपथ खाई, जो याकोव के पराक्रमी का निवास स्थान है (भजन संहिता १३२:२)। यहोवाह के उन सभी महान लोगों, और कई अन्य लोगों ने, अपनी सच्चाई के गवाह के रूप में प्रभु को बुलाते हुए शपथ और अनुबंध बनाए (देखें उत्पत्ति ४७:३१, ५०:२५; यहोशू ९:१५; न्यायियों २१:५; रूथ १:१६) -१८; दूसरा शमूएल १५:२१; दूसरा इतिहास १५:१४-१५)।

शपथ का स्पष्ट विवरण इब्रानियों की पुस्तक में दिया गया है: लोग अपने से बड़े किसी व्यक्ति की शपथ लेते हैं, और शपथ कही गई बात की पुष्टि करती है और सभी तर्कों को समाप्त कर देती है (इब्रानियों ६:१६ भी ६:१३-१४ भी देखें)। कही गई बात को अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए शपथ लेने वाले व्यक्ति से भी बड़े किसी व्यक्ति या व्यक्ति का नाम बुलाया जाता था। एडोनाई को दी गई कोई भी शपथ उन्हें कही गई बातों की ईमानदारी का गवाह बनने या झूठ होने पर बदला लेने के लिए आमंत्रित करती है। इसलिए माना जाता है कि शपथ को पूर्ण सत्य के रूप में लिया जाना चाहिए।

मसीहा ने अपने समय में शपथों के एक लोकप्रिय दुरुपयोग को संबोधित किया। अनजाने में शपथ लेने से ईश्वरीय नाम की पवित्रता की रक्षा के लिए, आम यहूदी प्रथा ने किन्नुइम, या शपथ लेने के लिए वस्तुओं को प्रतिस्थापित करने की शुरुआत की। हालाँकि कुछ बेईमान लोगों ने स्पष्ट रूप से सोचा कि अगर वे अपने दाहिने हाथ जैसी किसी चीज़ की कसम खाते हैं तो दूसरों को धोखा देना हानिरहित है। अन्य लोगों ने सभी शपथों को अधिक गंभीरता से लिया, लेकिन विशेष रूप से परमेश्वर के नाम का उपयोग करने के खिलाफ चेतावनी दी। उनका विश्वास था कि यदि शपथ टूट गई या पूरी नहीं हुई, तो एडोनाई के नाम की निंदा की जाएगी। उस समय रब्बियों को वास्तव में यह निर्णय करना था कि परमेश्वर के नाम के संकेत के रूप में कौन सी शपथ वास्तव में बाध्यकारी थीं। ईश्वर के वास्तविक नाम से ली गई शपथ को जितना अधिक हटाया जाएगा, इसका उल्लंघन करने पर उन्हें उतना ही कम ख़तरे का सामना करना पड़ेगा। लेकिन यीशु ने सिखाया: शपथ बिल्कुल मत खाओ (मत्ती ५:३४a)।

सामान्य सिद्धांत कि उनके शिष्यों को शपथ नहीं लेनी चाहिए, अब विशिष्ट शपथों के उदाहरणों की एक श्रृंखला द्वारा चित्रित किया गया है जो अनुपयुक्त हैं। परमेश्वर के नाम की शपथ खाने से बचने के लिए लोगों ने स्वर्ग और पृथ्वी, यरूशलेम और मन्दिर की शपथ खाई। तल्मूड एक उदाहरण देता है जिसमें एक प्रतिज्ञा को दृढ़ता से बरकरार रखा जाता है यदि यह “यरूशलेम के अधिकार के तहत, यरूशलेम के लिए, यरूशलेम द्वारा” के तहत किया जाता है। . . मंदिर के लिए, मंदिर के लिए, मंदिर के पास” (ट्रैक्टेट नेडारिम १)। यीशु का कहना यह है कि अडोनाई सभी अस्तित्वों का निर्माता और परमेश्वर है; स्वर्ग परमेश्वर का है (यशायाह ६६:१-२), पृथ्वी

Dk – तुमने सुना है कि यह कहा गया था: अपनी शपथ मत तोड़ो मत्ती
५:३३-३७ | 3

परमेश्वर का है (यशायाह ६६:१-२), यरूशलेम परमेश्वर का है (भजन ४८:२; मत्ती ५:३४-३५), मंदिर परमेश्वर का है (हबक्कूक २: २०) और तुम्हारे सिर के बाल भी ईश्वर के हैं। इसलिए, यीशु ने आदेश दिया: स्वर्ग की कसम मत खाओ, क्योंकि यह परमेश्वर का सिंहासन है; या पृय्वी के पास, क्योंकि वह उसके पांवोंकी चौकी है; या यरूशलेम द्वारा, क्योंकि यह महान के का शहर है. और अपने सिर की शपथ न खाना, क्योंकि तू एक बाल को भी सफेद या काला नहीं कर सकता (मत्ती ५:३४बी-३६)। इसलिए, किसी भी बेईमान, धोखेबाज या निष्ठाहीन चीज़ के गवाह के रूप में ईश्वर की किसी भी चीज़, चाहे उसका नाम या उसकी रचना का कोई भी हिस्सा, का उपयोग करना दुष्ट और पाप है। प्रत्येक झूठ परमेश्वर के विरूद्ध है, और प्रत्येक झूठी शपथ उसके नाम का अनादर करती है।

हालाँकि पहली सदी के यहूदी धर्म में किसी प्रकार के अतिरिक्त सुदृढीकरण की यह प्रथा स्वीकार्य थी, लेकिन इसका तात्पर्य यह था कि उनका मूल शब्द पर्याप्त अच्छा नहीं था। ईमानदारी का संकेत होने के बजाय, यह धोखे का प्रतीक बन गया। आत्मविश्वास जगाने के बजाय, इसने संशयवाद को बढ़ावा दिया।

हमारा प्रभु स्वयं शपथ के अधीन आया (मत्ती २६:६३-
६४), जैसा कि रब्बी शाऊल ने नाज़री प्रतिज्ञा के साथ किया था (प्रेरित १८:१८)। लेकिन मेशियाच यह स्पष्ट कर रहा है कि अगर हमारी बात ईमानदारी से कही गई है तो ऐसे सुदृढीकरण की कोई आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। उन्होंने सिखाया: बस अपने “हां” को “हां” होने दें और अपने “नहीं” को “नहीं” होने दें, इससे परे कुछ भी बुराई से आता है (मत्ती ५:३७)। सत्य की कोई डिग्री नहीं होती; आधा सच पूरा झूठ होता है. प्रभु के पास पूर्ण सत्यता के अलावा कभी कोई मानक नहीं रहा। परिणामस्वरूप, परमेश्वर का वचन कहता है कि परमेश्वर का बच्चा, सभी परिस्थितियों में, भरोसेमंद होना चाहिए।

यदि हम अपनी बेईमानी से सहज महसूस करने लगें, तो हम आसानी से स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी धोखा दे सकते हैं। हम अपने जीवन में पाप के पैटर्न कभी नहीं देख सकते हैं जो परमेश्वर के प्रेम और पवित्रता में हमारे विकास को रोक रहे हैं। हम परमेश्वर को कभी धोखा नहीं दे सकते; हालाँकि, कौन हमारे दिलों में झाँक कर जान सकता है कि वहाँ क्या है। ईमानदारी उसके साथ हमारे रिश्ते की जीवनधारा है।

Dk – तुमने सुना है कि यह कहा गया था: अपनी शपथ मत तोड़ो मत्ती
५:३३-३७ | 4

बाइबिल के मानकों के प्रति हमारी ईमानदारी और लगातार वफादारी एक ऐसी दुनिया के लिए एक शक्तिशाली गवाह हो सकती है जो संदेहपूर्ण है और उन लोगों के बीच पाखंड खोजने के लिए तैयार है जो आस्तिक होने का दावा करते हैं। जब हम स्वयं को मसीहा का अनुयायी कहते हैं, तो हम वास्तव में कहते हैं कि हम मसीह द्वारा स्थापित मानकों का पालन करेंगे। हम शब्दों से अधिक के माध्यम से सुसमाचार की गवाही दे सकते हैं; हमारी जीवनशैली और हमारे कार्य दुनिया को हमारे विश्वास की सच्ची गहराई को प्रकट करते हैं। ५३५ असीसी के संत फ्रांसिस ने इसे इस तरह कहा, “हर समय सुसमाचार का प्रचार करें।” . . और यदि आवश्यक हो तो शब्दों का प्रयोग करें।”

प्रभु यीशु, मैं अविश्वासी दुनिया के लिए आपका गवाह बनना चाहता हूं। कृपया मुझे उस पाप से शुद्ध करें जो मेरी विसंगतियों का कारण बनता है। मुझे अपने खून से धोएं ताकि मैं आपके प्रति अधिक वफादार और दूसरों के लिए अधिक विश्वसनीय गवाह बन सकूं। मुझे अपने पवित्र लोगों में से एक के रूप में बुलाए जाने की शक्ति और इच्छा देने के लिए अपनी पवित्र आत्मा भेजें।